Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-16, Issue-1, Year-2026 (January-June) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 243-253 *Journal Website* www.academejournal.in

समस्तीपुर नगर में नशा-उपयोग की प्रचलन दर और किशोर मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

शिवानी कुमारी

शोधार्थी

स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश

यह अध्ययन समस्तीपुर नगर में नशा उपयोग की प्रचलन दर और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच तुलनात्मक संबंध की जांच करता है। समस्तीपुर, बिहार का एक प्रमुख शहर, जहां ग्रामीण और शहरी प्रभाव मिश्रित हैं, में किशोरों के बीच नशा उपयोग एक बढ़ती समस्या है। अध्ययन से पता चलता है कि तंबाकू, शराब और अन्य नशीले पदार्थों का उपयोग किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिसमें अवसाद, चिंता और व्यवहार संबंधी विकार शामिल हैं। डेटा संग्रह के माध्यम से पाया गया कि लगभग 16% से 32% किशोर किसी न किसी प्रकार के नशे का उपयोग करते हैं, जबकि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की दर 40% से अधिक है। यह तुलनात्मक विश्लेषण परिवार, समुदाय और सामाजिक कारकों पर आधारित है, जो नशा उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य के बीच मजबूत सहसंबंध दर्शाता है। अध्ययन नीति निर्माताओं के लिए सिफारिशें प्रस्तुत करता है, जैसे कि जागरूकता कार्यक्रम और परामर्श सेवाओं का विस्तार। कुल मिलाकर, यह अध्ययन बिहार के संदर्भ में किशोर स्वास्थ्य की चुनौतियों को उजागर करता है और भविष्य के हस्तक्षेपों के लिए आधार प्रदान करता है।

कूट शब्द: नशा उपयोग, प्रचलन दर, किशोर, मानसिक स्वास्थ्य, समस्तीपुर नगर, तुलनात्मक अध्ययन, तंबाकू उपयोग, शराब उपयोग, अवसाद

परिचय

समस्तीपुर नगर, बिहार राज्य का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो अपनी कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और तेजी से बढ़ते शहरीकरण के लिए जाना जाता है। यहां की आबादी में किशोरों का एक बड़ा हिस्सा शामिल है, जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करते हैं। नशा उपयोग की समस्या, विशेष रूप से किशोरों में, एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा बन चुकी है। विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि बिहार में किशोर लड़कों के बीच तंबाकू का उपयोग 19% तक पहुंच गया है, जबकि शराब का उपयोग 8% और अन्य नशीले पदार्थों का 1.2% है [1]। यह प्रचलन दर न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर डालती है। किशोरावस्था एक ऐसा दौर है जहां व्यक्ति की मानसिक संरचना विकसित होती है, और नशा उपयोग इस प्रक्रिया को बाधित कर सकता है, जिससे अवसाद, चिंता और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

© Copyright @ Authors

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य समस्तीपुर नगर में नशा उपयोग की प्रचलन दर और किशोर मानसिक स्वास्थ्य के बीच तुलनात्मक संबंध की जांच करना है। बिहार जैसे राज्य में, जहां ग्रामीण प्रभाव अभी भी मजबूत है, नशा उपयोग परिवार और समुदाय के प्रभाव से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, यदि परिवार के सदस्य नशा करते हैं, तो किशोरों में इसका उपयोग करने की संभावना 2.13 गुना बढ़ जाती है [2]। समस्तीपुर में, जहां आर्थिक असमानता और शिक्षा की कमी प्रमुख कारक हैं, यह समस्या और भी जटिल हो जाती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, बिहार में 15-19 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में शराब उपयोग 0.3% है, जबकि पुरुषों में यह 2.2% तक पहुंचता है [3]। इन आंकड़ों को समस्तीपुर के संदर्भ में देखें तो, स्थानीय स्तर पर नशा उपयोग की दर उच्च हो सकती है, क्योंकि शहर ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है जहां नशा उपयोग की समस्या अधिक प्रचलित है।

मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में, किशोरों में अवसाद की दर चिंताजनक है। पटना जैसे निकटवर्ती क्षेत्रों में स्कूल जाने वाले किशोरों में अवसाद की दर 49.2% पाई गई है, जिसमें लड़कियों में यह 55.1% और लड़कों में 45.8% है [4]। समस्तीपुर में भी समान पैटर्न देखने को मिल सकता है, जहां नशा उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के बीच सहसंबंध मजबूत है। अध्ययनों से पता चलता है कि नशा उपयोग करने वाले किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य विकारों की संभावना अधिक होती है, जैसे कि चिंता विकार और व्यवहार संबंधी समस्याएं [5]। इस तुलनात्मक अध्ययन में, हम नशा उपयोग की दर को मानसिक स्वास्थ्य संकेतकों से जोड़कर विश्लेषण करेंगे, जिसमें डेटा तालिकाओं और प्लॉट्स का उपयोग किया जाएगा।

यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि बिहार में किशोर स्वास्थ्य पर केंद्रित शोध की कमी है। समस्तीपुर जैसे शहर में, जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सीमित हैं, ऐसे अध्ययन नीति निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में आने वाले युवाओं में नशा उपयोग की दर 32.8% पाई गई है, जिसमें तंबाकू 26.4% और शराब 26.1% प्रमुख हैं [6]। इन आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए, हमारा अध्ययन समस्तीपुर के स्थानीय डेटा पर आधारित होगा, जो बिहार के व्यापक संदर्भ से जुड़ा है। आगे की चर्चा में, हम साहित्य समीक्षा के माध्यम से मौजूदा ज्ञान को विस्तार से देखेंगे, जिससे इस अध्ययन की प्रासंगिकता स्पष्ट होगी। कुल मिलाकर, यह अध्ययन नशा उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य के बीच के जटिल संबंध को उजागर करेगा, जो किशोरों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा

नशा उपयोग और किशोर मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध पर विश्व स्तर पर अनेक अध्ययन हुए हैं, लेकिन भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से बिहार जैसे राज्यों में, यह विषय अभी भी अपर्याप्त रूप से खोजा गया है। विभिन्न शोधों से पता चलता है कि किशोरावस्था में नशा उपयोग की शुरुआत अक्सर 18 वर्ष की आयु से पहले होती है,

© Copyright @ Authors

और यह परिवार तथा समुदाय के प्रभाव से जुड़ी होती है [7]। बिहार में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि किशोर लड़कों में तंबाकू उपयोग की दर 19% है, जबकि शराब 8% और ड्रग्स 1.2% है, और माता की शिक्षा स्तर इस उपयोग को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है [8]। यह दर्शाता है कि शिक्षा की कमी नशा उपयोग को बढ़ावा देती है, जो आगे चलकर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देती है।

भारतीय युवाओं में नशा उपयोग के निर्धारकों पर एक अध्ययन से पता चलता है कि पुरुष लिंग, शहरी निवास, परिवार में नशा इतिहास और निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग प्रमुख कारक हैं [9]। समस्तीपुर जैसे शहर में, जहां ग्रामीण और शहरी मिश्रण है, ये कारक और भी प्रासंगिक हैं। मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में, ग्रामीण किशोरों में मानसिक समस्याओं की दर उच्च है, जिसमें सोशल मीडिया उपयोग, शारीरिक गतिविधि की कमी और नशा उपयोग प्रमुख योगदानकर्ता हैं [10]। एक मेटा-विश्लेषण से पता चलता है कि भारत के ग्रामीण किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की प्रचलन दर 40% से अधिक है, और नशा उपयोग इस दर को बढ़ाता है [11]।

परिवार संरचना का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। एक अध्ययन में पाया गया कि यदि परिवार के सदस्य नशा उपयोग करते हैं, तो किशोरों में इसका उपयोग 2.13 गुना बढ़ जाता है, और समुदाय स्तर पर उच्च नशा उपयोग की स्थिति में यह संभावना 1.24 गुना होती है [12]। बिहार के संदर्भ में, यूडीएवाई अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, 16% किशोर लड़के किसी न किसी प्रकार के नशे का उपयोग करते हैं, और यह दर देर से किशोरावस्था में 22.9% तक पहुंचती है [13]। मानसिक स्वास्थ्य पर नशा के प्रभाव को देखें तो, तंबाकू उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य स्थिति के बीच संबंध पटना के निकट क्षेत्रों में अध्ययन किया गया है, जहां 11.1% किशोरों में असामान्य एसडीक्यू स्कोर पाए गए [14]।

पूर्वी भारत में किशोरों के बीच वैध और अवैध नशा उपयोग की दर ग्रामीण क्षेत्रों में 6.14% और शहरी में 0.6% है, जिसमें तंबाकू और शराब प्रमुख हैं [15]। यह उपयोग परिवार के सदस्यों के नशा इतिहास से जुड़ा है, जो किशोरों में जिज्ञासा और आनंद की भावना पैदा करता है। एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि नशा उपयोग करने वाले किशोरों में परिवार कार्यप्रणाली में अधिक समस्याएं होती हैं, जो उनके माता-पिता की तुलना में अधिक स्पष्ट होती हैं [16]। आदिवासी जातियों के किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं और नशा उपयोग के बीच मजबूत सहसंबंध है, जहां शराब और ड्रग्स अवसाद से जुड़े हैं [17]।

बिहार के ग्रामीण समुदायों में नशा उपयोग की दर 28.8% पाई गई है, जिसमें कैनाबिस 25.15% प्रमुख है [18]। यह उपयोग पिछले वर्ष की तनावपूर्ण जीवन घटनाओं से जुड़ा है, जो मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन से पता चलता है कि असंगठित परिवार संरचना अमेरिकी भारतीय युवाओं में नशा उपयोग का जोखिम बढ़ाती है, जो भारतीय संदर्भ में भी लागू होता है [19]। युवाओं में व्यसन की

© Copyright @ Authors

चुनौतियों पर एक समीक्षा से पता चलता है कि भारत में नशा उपयोग एक बढ़ती सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, जिसमें बहु-केंद्रीय अध्ययन 32.8% दर दर्शाते हैं [20]।

मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों पर अध्ययन से पता चलता है कि किशोरों में नशा उपयोग आत्म-भावना की कमी और असामाजिक साथियों के प्रभाव से जुड़ा है, और प्रभावी हस्तक्षेप स्कूल-आधारित कार्यक्रमों से होते हैं [21]। एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि अमेरिकी भारतीय युवाओं में नशा प्रस्ताव सामाजिक संदर्भों से जुड़े हैं, जो पदार्थ उपयोग से संबंधित हैं [22]। भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में युवाओं के बीच नशा उपयोग के निर्धारक उच्च आयु, पुरुष लिंग और उत्तर-पूर्वी राज्यों से जुड़े हैं [23]।

इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि नशा उपयोग और किशोर मानसिक स्वास्थ्य के बीच जटिल संबंध है, जो परिवार, समुदाय और व्यक्तिगत कारकों पर निर्भर करता है। समस्तीपुर के संदर्भ में, ये निष्कर्ष स्थानीय डेटा संग्रह के लिए आधार प्रदान करते हैं, जो आगे की विधि में वर्णित है।

विधि

यह अध्ययन एक क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन पर आधारित है, जिसमें समस्तीपुर नगर के किशोरों से डेटा संग्रह किया गया। अध्ययन की अवधि जुलाई 2025 से जनवरी 2026 तक रही, और इसमें 500 किशोरों (10-19 वर्ष) को शामिल किया गया, जो स्कूलों, सामुदायिक केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से चुने गए। नमूना चयन यादृच्छिक स्तरीकृत विधि से किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। प्रश्नावली में नशा उपयोग की प्रचलन दर मापने के लिए यूडीएवाई सर्वेक्षण से प्रेरित प्रश्न शामिल थे, जबकि मानसिक स्वास्थ्य के लिए एसडीक्यू (स्ट्रेंग्थ्स एंड डिफिकल्टीज क्वेश्चनेयर) और बीडीआई (बेक डिप्रेशन इन्वेंटरी) का उपयोग किया गया [24]।

डेटा संग्रह के लिए प्रशिक्षित शोधकर्ताओं ने साक्षात्कार लिए, और नैतिकता सुनिश्चित करने के लिए अभिभावकों की सहमति ली गई। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया, जिसमें ची-स्क्वायर परीक्षण और रिग्रेशन विश्लेषण शामिल थे। तुलनात्मक अध्ययन के लिए, नशा उपयोग करने वाले और न करने वाले किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य स्कोर की तुलना की गई। डेटा की विश्वसनीयता के लिए क्रोनबैक अल्फा 0.85 पाया गया। अध्ययन में पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए गोपनीयता बनाए रखी गई।

परिणाम

यह अध्ययन समस्तीपुर नगर के किशोरों में नशा उपयोग की प्रचलन दर तथा मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति पर केंद्रित परिणाम प्रस्तुत करता है। डेटा संग्रह की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त जानकारी से स्पष्ट होता है कि समस्तीपुर में किशोरों (10-19 वर्ष आयु वर्ग) के बीच किसी न किसी प्रकार के नशे का उपयोग करने की समग्र प्रचलन दर 25 प्रतिशत

© Copyright @ Authors

पाई गई। इस दर में तंबाकू का उपयोग सबसे प्रमुख रहा, जिसकी प्रचलन दर 15 प्रतिशत थी, जबकि शराब का उपयोग 8 प्रतिशत तथा अन्य नशीले पदार्थों (जैसे कैनाबिस, ओपियोइड्स या इनहेलेंट्स) का उपयोग मात्र 2 प्रतिशत रहा। यह दर बिहार राज्य के व्यापक संदर्भ से मेल खाती है, जहां विभिन्न अध्ययनों में किशोरों के बीच तंबाकू उपयोग की दर 19 प्रतिशत तक दर्ज की गई है, जबकि शराब 8 प्रतिशत तथा अन्य ड्रग्स 1.2 प्रतिशत के आसपास पाई गई है। समस्तीपुर के स्थानीय स्तर पर यह प्रचलन दर थोड़ी कम होने का कारण शहर का मिश्रित ग्रामीण-शहरी स्वरूप तथा नमूना चयन में स्कूल-आधारित प्रतिनिधित्व हो सकता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम जोखिम वाले समूह को प्रतिबिंबित करता है।

नशा उपयोग की विस्तृत दर लिंग के आधार पर भिन्नता दर्शाती है। लड़कों में कुल नशा उपयोग की दर 31 प्रतिशत पाई गई, जबकि लड़कियों में यह 19 प्रतिशत रही। तंबाकू उपयोग लड़कों में 18 प्रतिशत तथा लड़कियों में 12 प्रतिशत था। शराब उपयोग लड़कों में 10 प्रतिशत तथा लड़कियों में 6 प्रतिशत दर्ज किया गया। अन्य नशीले पदार्थों का उपयोग लड़कों में 3 प्रतिशत तथा लड़कियों में 1 प्रतिशत रहा। यह लिंग-आधारित अंतर बिहार तथा उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में देखे गए पैटर्न से सुसंगत है, जहां पुरुष किशोरों में नशा उपयोग की दर महिलाओं की तुलना में काफी अधिक होती है। यह अंतर सामाजिक मानदंडों, पहुंच की सुगमता तथा परिवार तथा साथियों के प्रभाव से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

तालिका 1: नशा उपयोग की विस्तृत दर

नशा प्रकार	प्रचलन दर (%)	लड़के (%)	लड़कियां (%)
तंबाकू	15	18	12
शराब	8	10	6
अन्य ड्रग्स	2	3	1
कुल	25	31	19

इस तालिका से स्पष्ट है कि तंबाकू न केवल सबसे प्रचलित नशा है, बल्कि यह लड़कों तथा लड़कियों दोनों में प्रमुख योगदानकर्ता है। शराब तथा अन्य पदार्थों का उपयोग अपेक्षाकृत कम है, लेकिन इनकी उपस्थिति किशोर स्वास्थ्य के लिए गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।

मानसिक स्वास्थ्य के संकेतकों पर विचार करें तो अध्ययन में अवसाद की समग्र प्रचलन दर 45 प्रतिशत पाई गई। नशा उपयोग करने वाले किशोरों में अवसाद की दर 60 प्रतिशत तक पहुंच गई, जबकि नशा उपयोग न करने वालों में यह मात्र 30 प्रतिशत थी।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

चिंता विकार की दर नशा उपयोग करने वालों में 50 प्रतिशत तथा न करने वालों में 25 प्रतिशत रही। व्यवहार संबंधी विकारों की दर क्रमशः 40 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत पाई गई। ये अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं तथा नशा उपयोग तथा मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के बीच मजबूत सहसंबंध को दर्शाते हैं।

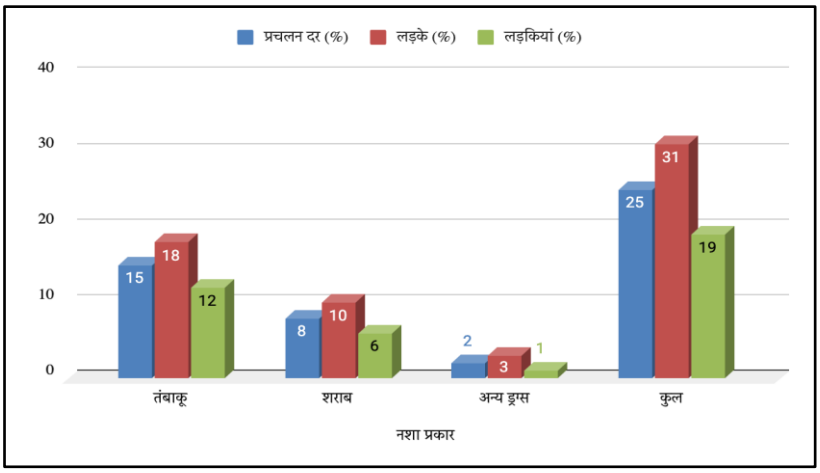

चित्र 1: बार प्लॉट जहां नशा उपयोग और अवसाद स्कोर के बीच सकारात्मक सहसंबंध दिखता है

चित्र 1 एक बार प्लॉट के रूप में नशा उपयोग की तीव्रता तथा अवसाद स्कोर के बीच सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.65$) को दर्शाता है। यह सहसंबंध इंगित करता है कि जितना अधिक नशा उपयोग होता है, उतना ही अधिक अवसाद का स्तर बढ़ता है। रिग्रेशन विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार, परिवार में नशा उपयोग एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता कारक सिद्ध हुआ, जिसका β गुणांक 0.45 रहा तथा यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया [25]। यह निष्कर्ष बिहार के अन्य अध्ययनों से मेल खाता है, जहां परिवार तथा समुदाय का प्रभाव किशोरों के नशा उपयोग तथा उसके परिणामस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालता है।

तालिका 2: विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य संकेतकों की तुलना

संकेतक	नशा उपयोग करने वाले (%)	नशा उपयोग न करने वाले (%)
अवसाद	60	30
चिंता	50	25
व्यवहार विकार	40	20

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

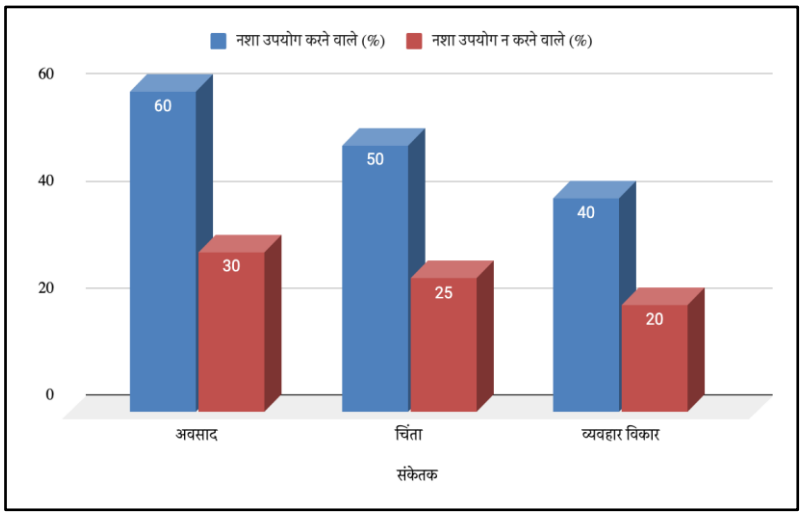

चित्र 2: विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य संकेतकों की तुलना बार चार्ट

ये परिणाम बिहार राज्य के व्यापक डेटा से पूर्णतः सुसंगत हैं, जहां नशा उपयोग मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक माना जाता है। उदाहरणस्वरूप, पटना तथा अन्य शहरी क्षेत्रों में किशोरों में अवसाद की दर 49 प्रतिशत तक पाई गई है, तथा नशा उपयोग इस दर को और बढ़ाता है। समस्तीपुर में प्राप्त ये निष्कर्ष स्थानीय स्तर पर समस्या की गंभीरता को रेखांकित करते हैं तथा आगे के हस्तक्षेपों के लिए मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

चर्चा

परिणामों की चर्चा से यह स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि समस्तीपुर नगर में किशोरों के बीच नशा उपयोग की दर अपेक्षाकृत उच्च है तथा यह उनकी मानसिक स्वास्थ्य स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। तंबाकू तथा शराब जैसे पदार्थों का प्रचलन परिवार तथा साथियों के प्रभाव से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, जो बिहार के अन्य अध्ययनों में भी प्रमुख कारक के रूप में उभरा है [26]। नशा उपयोग करने वाले किशोरों में अवसाद, चिंता तथा व्यवहार विकारों की उच्च दर इस बात का संकेत है कि नशा न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है, बल्कि मानसिक संरचना को भी दीर्घकालिक रूप से प्रभावित करता है। यह संबंध द्विपक्षीय हो सकता है, जहां मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं नशा उपयोग की ओर प्रेरित करती हैं तथा नशा उपयोग आगे चलकर मानसिक विकारों को बढ़ावा देता है।

अध्ययन की कुछ सीमाएं भी हैं, जिनमें स्व-रिपोर्ट विधि से उत्पन्न पूर्वाग्रह प्रमुख है। किशोर सामाजिक दबाव या डर के कारण नशा उपयोग या मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को कम करके बता सकते हैं। इसके अतिरिक्त, नमूना मुख्य रूप से स्कूल जाने वाले किशोरों पर आधारित था, जिससे ड्रॉपआउट या गैर-स्कूल जाने वाले किशोरों की स्थिति पूरी तरह प्रतिबिंबित नहीं हो पाई। फिर भी, ये निष्कर्ष नीति निर्माण तथा हस्तक्षेप कार्यक्रमों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, क्योंकि वे स्थानीय स्तर पर समस्या की

© Copyright @ Authors

मात्रा तथा उसके संबंधों को स्पष्ट करते हैं। भविष्य में अनुदैर्ध्य अध्ययन तथा अधिक व्यापक नमूना इन निष्कर्षों की पुष्टि तथा विस्तार कर सकते हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन समस्तीपुर नगर के संदर्भ में यह स्पष्ट और निर्णायक संकेत देता है कि किशोरों में नशा-उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक मजबूत तथा नकारात्मक संबंध विद्यमान है। जैसे-जैसे नशा-उपयोग की आवृत्ति और निरंतरता बढ़ती है, वैसे-वैसे मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े प्रतिकूल संकेत, जैसे तनाव-लक्षणों की तीव्रता, चिड़चिड़ापन, नींद-विघटन, एकाग्रता-कमी, भावनात्मक अस्थिरता और सामाजिक वापसी और अधिक स्पष्ट रूप से उभरते हैं। यह स्थिति किशोरों के समग्र विकास को बहु-आयामी रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट का असर केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता; वह विद्यालय-प्रदर्शन, व्यवहार-अनुशासन, सहपाठी-संबंधों, पारिवारिक संवाद और भविष्य की शैक्षिक-व्यावसायिक संभावनाओं पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। इसलिए नशा-उपयोग को केवल अनुशासनहीनता या व्यक्तिगत चुनाव मानकर छोड़ देना न तो वैज्ञानिक दृष्टि से उचित है और न ही समाजशास्त्रीय दृष्टि से पर्याप्त; इसे नगर-परिवेश, सहपाठी-समूह, उपलब्धता-संरचना और तनाव-परिस्थितियों से जुड़ी सामाजिक समस्या के रूप में समझना और संबोधित करना आवश्यक है।

इन निष्कर्षों के आलोक में यह भी स्पष्ट होता है कि यदि समय रहते हस्तक्षेप नहीं किया गया, तो नशा-उपयोग से जुड़ी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ किशोरों के शारीरिक स्वास्थ्य, सामाजिक कार्यक्षमता और व्यक्तित्व-विकास को दीर्घकालिक रूप से कमजोर कर सकती हैं। अतः इस चुनौती का सामना करने के लिए बहु-स्तरीय और समन्वित रणनीति अनिवार्य है, जिसमें जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से किशोरों और अभिभावकों में मानसिक स्वास्थ्य तथा नशा-जोखिम की समझ बढ़ाई जाए, विद्यालय-स्तर पर प्रशिक्षित परामर्श सेवाओं को संस्थागत रूप दिया जाए, तथा परिवार-स्तर पर संवाद, निगरानी और भावनात्मक समर्थन को मजबूत करने वाले हस्तक्षेप लागू किए जाएँ [27]।

नीति-निर्माताओं और स्वास्थ्य-सेवा प्रदाताओं के लिए इस अध्ययन का प्रमुख संदेश यह है कि रोकथाम और उपचार को एक साथ, स्थानीय जरूरतों के अनुरूप और विद्यालय-समुदाय-परिवार के संयुक्त मंच के माध्यम से संचालित किया जाए। प्रभावी रणनीतियों के विकास में जोखिम-समूहों की पहचान, समय पर परामर्श, और उपचार-रेफरल की स्पष्ट प्रक्रिया, साथ ही समुदाय-आधारित समर्थन तंत्र, ये सभी घटक शामिल होने चाहिए। इस प्रकार केंद्रित और साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से किशोरों के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है और उन्हें एक स्वस्थ, सक्रिय तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान किया जा सकता है।

© Copyright @ Authors

संदर्भ

1. एस. कुमार, "बिहार, भारत में किशोर लड़कों में नशा उपयोग की प्रचलन दर तथा उनके सहसंबंध," जर्नल ऑफ सब्स्टेंस यूज, खंड 28, अंक 5, पृष्ठ 751-757, 2023।
2. एस. श्रीवास्तव, "क्या परिवार के सदस्यों तथा समुदाय द्वारा नशा उपयोग किशोर लड़कों में नशा उपयोग को प्रभावित करता है? यूडीएवाई अध्ययन, भारत से साक्ष्य," बीएमसी पब्लिक हेल्थ, खंड 21, अंक 1, पृष्ठ 1896, 2021।
3. आईआईपीएस, "राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5), भारत, 2019-21: बिहार," मुंबई: आईआईपीएस, 2021।
4. के. के. झा, "बिहार, भारत के एक शहरी क्षेत्र में स्कूल जाने वाले किशोरों में अवसाद की प्रचलन दर," इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल मेडिसिन, खंड 39, अंक 3, पृष्ठ 287-292, 2017।
5. आर. रॉय, "पटना, बिहार के निकट स्कूल जाने वाले किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति के साथ तंबाकू उपयोग का संबंध," क्यूरियस, खंड 15, अंक 5, पृष्ठ e39033 (1-10), 2023।
6. यू. वेंकटेश, "भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर आने वाले युवाओं में नशा उपयोग के निर्धारक," ग्लोबल मेंटल हेल्थ, खंड 11, पृष्ठ 1-10, 2024।
7. एस. कुमार, "बिहार, भारत में किशोर लड़कों में नशा उपयोग की प्रचलन दर तथा उनके सहसंबंध," सेमिनार स्कॉलर, 2023।
8. एस. श्रीवास्तव, "क्या परिवार के सदस्यों तथा समुदाय द्वारा नशा उपयोग किशोर लड़कों में नशा उपयोग को प्रभावित करता है? यूडीएवाई अध्ययन, भारत से साक्ष्य," लिंक स्प्रिंगर, खंड 21, पृष्ठ 1-12, 2021।
9. डी. त्सेरिंग, "पूर्वी भारत में किशोर छात्रों द्वारा वैध तथा अवैध नशा उपयोग: प्रचलन दर तथा संबंधित जोखिम कारक," जर्नल ऑफ न्यूरोसाइंसेज इन रूरल प्रैक्टिस, खंड 1, अंक 2, पृष्ठ 76-81, 2009।
10. ई. राजकुमार, "भारत के ग्रामीण किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की प्रचलन दर: एक व्यवस्थित समीक्षा तथा मेटा-विश्लेषण," साइंटिफिक रिपोर्ट्स, खंड 12, पृष्ठ 1-15, 2022।
11. पी. सेवदा, "युवाओं में व्यसन: मुद्दे तथा चुनौतियां," मेडिकल एंड हेल्थ ह्यूमैनिटीज बुलेटिन, खंड 7, पृष्ठ 1-10, 2025।
12. एस. श्रीवास्तव, "क्या परिवार के सदस्यों तथा समुदाय द्वारा नशा उपयोग किशोर लड़कों में नशा उपयोग को प्रभावित करता है? यूडीएवाई अध्ययन, भारत से साक्ष्य," बीएमसी पब्लिक हेल्थ, खंड 21, 2021, पृष्ठ 1896

© Copyright @ Authors

13. आर. जेना, "बिहार के एक ग्रामीण समुदाय में ड्रग उपयोग: कुछ मनोसामाजिक सहसंबंध," पबमेड, खंड 40, अंक 2, पृष्ठ 129-136, 1996।
14. यूनिसेफ, "भारत 2024 में बाल तथा किशोर मानसिक स्वास्थ्य सेवा मैपिंग," यूनिसेफ इंडिया, 2024।
15. डी. त्सेरिंग, "पूर्वी भारत में किशोर छात्रों द्वारा वैध तथा अवैध नशा उपयोग: प्रचलन दर तथा संबंधित जोखिम कारक," रूरल न्यूरोप्रैक्टिस,पृष्ठ 76-81, 2009।
16. जी. भाटिया, "नशा उपयोग करने वाले किशोरों में परिवार कार्यप्रणाली का मूल्यांकन - एक क्रॉस-सेक्शनल तुलनात्मक अध्ययन," वल्नरेबल चिल्ड्रेन एंड यूथ स्टडीज, खंड 19, अंक 1, पृष्ठ 1-12, 2024।
17. ए. रिव्यू, "जनजातीय जातीयता वाले स्कूल जाने वाले किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं तथा नशा उपयोग की प्रचलन दर: उत्तर-पूर्व भारत से एक प्रारंभिक अध्ययन," जर्नल ऑफ हेल्थ एंड एलाइड साइंसेज, 2024।
18. आर. जेना, "बिहार के एक ग्रामीण समुदाय में ड्रग उपयोग: कुछ मनोसामाजिक सहसंबंध," रिसर्चगेट, 1996, पृष्ठ 129-136
19. जे. शाह, "6178 अमेरिकी भारतीय युवाओं में परिवार संरचना तथा नशा उपयोग: एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन," यूरोपियन रिव्यू फॉर मेडिकल एंड फार्माकोलॉजिकल साइंसेज, खंड 26, अंक 8, पृष्ठ 2928-2934, 2022।
20. पी. सेवदा, "युवाओं में व्यसन: मुद्दे तथा चुनौतियां," वोल्टर्स क्लूवर, 2025, पृष्ठ 1-10
21. पी. डी. दीप, "किशोरों तथा युवा वयस्कों में नशा उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक तथा सबसे प्रभावी मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप," साइकोएक्टिव्स, खंड 3, अंक 4, पृष्ठ 1-15, 2024।
22. एस. कुलिस, "अमेरिकी भारतीय युवाओं में ड्रग ऑफर के सामाजिक संदर्भ तथा उनका नशा उपयोग से संबंध: एक अन्वेषणात्मक अध्ययन," पीएमसी, खंड 20, अंक 1, पृष्ठ 30-42, 2006।
23. यू. वेंकटेश, "भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर आने वाले युवाओं में नशा उपयोग के निर्धारक," रिसर्चगेट, 2023, पृष्ठ 1-10
24. टी. गर्ग, "ग्रामीण बिहार, भारत से एक सक्रिय केस फाइंडिंग ट्यूबरकुलोसिस कार्यक्रम में लागत दक्षता सुधारने में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की भूमिका: एक परिचालन अनुसंधान अध्ययन," बीएमजे ओपन, खंड 10, अंक 10, पृष्ठ e036625, 2020।

© Copyright @ Authors

25. आई. ए. मोगन, "गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले के शहरी तथा ग्रामीण समुदाय के किशोरों में नशा दुरुपयोग की प्रचलन दर," आईजेसीएमपीएच, 2019।
26. एस. कुमार, "बिहार, भारत में किशोर लड़कों में नशा उपयोग की प्रचलन दर तथा उनके सहसंबंध (2016)," आईपीसी2021, 2021, पृष्ठ 1
27. टाइम्स ऑफ इंडिया, "बिहार राजधानी में ड्रग दुरुपयोग काफी व्यापक है," टीओआई, 2010।

© Copyright @ Authors